Vol-1, Issue-2

बाज़ारवादी विमर्श के अनदेखे, अनजाने, अनकहे गवाक्ष 'मुत्री मोबाइल'

डॉ. किरण ग्रोवर

सह-प्रोफेसर स्नातकोत्तर हिन्दी विभाग डी.ए.वी.कालेज, अबोहर

शोध सारांश:

बाज़ारवाद के दौर में हम बाज़ार जाते नहीं बल्कि बाज़ार की चीज़ें हमारा पीछा करती हैं। बाज़ारवादी व्यवस्था हमसे सांस्कृतिक अस्मिता को छीन रही हैं। बाज़ारवाद के कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्खलन हुआ है। बाज़ार का प्रभाव इतना सूक्ष्म है कि इसने हमारे चिरत्र में परिवर्तन कर दिया है। बाज़ारवादी संस्कृति किस प्रकार मनुष्य की मान्यताओं को लीलकर भौतिक लिप्साओं को जागृत कर सामान्य को विशिष्ट बनने के लिए विवश करती है। प्रदीप सौरभ ने 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में आधुनिक महानगरीय जीवन के कई अनदेखे, अनजाने, अनकहे गवाक्षों को बेधड़क खोलने का साहस दिखाया है। लेखक ने समकालीन सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ की परतों का अनावरण करते हुए सांस्कृतिक इकाइयों के संघर्षपूर्ण जीवन को बनते बिगड़ते दिखाया है तथा वर्गीय, साम्प्रदायिक व क्षेत्रीय अस्मिताओं की पड़ताल की है। साहिबाबाद दिल्ली एन0सी0आर0 का वर्णन करते हुए मुन्नी के माध्यम से शहरीकरण, औद्योगिकरण, सामंतवाद व पूँजीवाद के अंतर्सम्बन्धों को रेखांकित किया है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रदीप सौरभ ने ऐसी गाथा रची है जो भौतिक संसाधनों को पा लेने पर भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने वालों की सच्चाई को परत दर परत उघेड़ा है। 21वीं सदी की निम्न वर्गीय स्त्री पर रचित यह उपन्यास यथार्थ के नए पन्नों को खोलता है। उपभोक्तावादी संस्कृति के भंवर में बहती स्त्री की गाथा का गायन किया है। उपभोक्तावादी संस्कृति के पंवर में बहती स्त्री की गाथा का गायन किया है। उपभोक्तावादी संस्कृति में स्त्री जागरक, सचेत, सिक्रय उपभोक्ता के रूप में मौजूद है। भौतिकतावाद के यग में प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'मुन्नी मोबाइल' बाजारवाद का प्रामाणिक व जीवन्त दस्तावेज है।

बीज शब्दः

अस्मिता, दस्तावेज, लिप्सा, विशिष्ट, गवाक्ष, भंवर, उपभोक्ता, शहरीकरण

विज्ञारवाद के दौर में हम बाज़ार जाते नहीं बल्कि बाज़ार की चीज़ें हमारा पीछा करती हैं। आज हमारी नैतिकता, मूल्य, भावनाओं और संस्कृति पर संकट गहरा रहा है। अनियंत्रित धनसम्पदा, मूल्यहीन बाज़ार, अनियमित विकास ने बाज़ारवाद को जन्म दिया। बाज़ारवाद हमारे चारों ओर मायानगरी की भाँति व्याप्त है। उपभोक्तावाद और सूचना क्रान्ति की अन्धी दौड़ ने हमारे पारस्परिक प्रेम व सद्भाव की गांठ ढीली कर दी है। वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण के चमकीले नारों के पीछे हमारी मानवीय संवेदना को ग्रहण लग चुका है। बाज़ारवाद की इस हिंसा की आंधी ने स्वच्छ हवा, जल, अन्न, आचार, विचार, सोच, मन्थन आदि सभी को गिरवी रख लिया है। बाज़ारवादी संस्कृति मीडिया के माध्यम से मुनाफ़ाखोरी को बढ़ावा दे रही हैं। बाज़ारवादी ताकतों ने प्रेम को बाज़ारवादी व्यवस्था से जोड़कर अस्तित्व को बनाये रखने के लिए साधन सम्पन्न व साधन हीन दो वर्ग बनाकर खाई को और अधिक गहरा किया है। बाज़ारवादी व्यवस्था हमसे सांस्कृतिक अस्मिता को छीन रही हैं। बाज़ारवाद के कारण व्यक्ति के व्यक्तित्व का स्खलन हुआ है। बाज़ार का प्रभाव इतना सूक्ष्म है कि इसने हमारे चिरत्र में परिवर्तन कर दिया है। बढ़ती महत्वाकांक्षाओं की गड़बड़ी ने गरीब को बुनियादी अधिकारों से वंचित कर दिया है। आज मनुष्य सभ्यता के उस मोड़ पर खड़ा है जहाँ चहुँ ओर बाज़ार ही बाज़ार है। समकालीन दौर में वस्तुएँ बोलती हैं और इन्सान चुप्पी साधे हुए है।² समय के साथ बाज़ार की चमक और गित बढ़ती जी रही है। तकनीकी विकास के साथ-साथ जैसे हमारे सपने यथार्थ से विमुख हो रहे हैं, वैसे बाज़ार हमारे मनोमस्तिष्क पर हावी हो रहा है।

पूर्वोत्तर प्रभा वर्ष-1, अंक-2 जुलाई-दिसंबर 2021

साहित्यकार का सामाजिक और लेखकीय दायित्व होता है। जिस प्रकार साहित्य व जीवन का निर्विवाद सम्बन्ध है उसी प्रकार साहित्यकार और उसके समाज का पारस्परिक सम्बन्ध है।³ बाज़ार हमेशा था और हमेशा रहेगा किन्तू मानव निर्मित होकर भी यदि मानव पर हावी हो जाये तो समाज के सचेत साहित्यकार की मुख्य भूमिका हो जाती है कि वे बाज़ार के खतरों के प्रति आम आदमी को सचेत करें। डाॅ नामवर सिंह जी ने लिखा है कि साहित्य के रुप में समाज की जो छाया प्रकट होती हे वह लेखक के व्यक्तित्व के माध्यम से आती है। साहित्य रचना की प्रक्रिया में समाज, लेखक और साहित्य परस्पर प्रभावित, परिवर्तित और विकसित होता रहता है।4 साहित्य,समाज और साहित्यकार तीनों पृथक होते हुए भी एक इकाई हैं जिनसे नव्य रचना का सृजन होता है। बाज़ार ने व्यक्ति की जरुरतों को इतना फैलाव दिया है कि सम्बन्ध संकृचित हो गये हैं। आज मनुष्य कर्तव्यों ,मुल्यों और जरुरतों को नज़र अन्दाज़ करता हुआ बाज़ार के नियमों से संचालित होने लगा है। अंधाधुंध गति से पसर रही बाज़ार की शक्तियां समाज की कमजोरी को पहचान कर निरन्तर गर्त में धकेल रही हैं। ⁵ बाज़ारवादी ताकतें समाज पर हावी हो रही हैं। लोगों की आदतें और दिमाग का ढांचा बदलने का काम बाज़ारवाद ने किया है। बाज़ारवादी संस्कृति किस प्रकार मनुष्य की मान्यताओं को लीलकर भौतिक लिप्साओं को जागृत कर सामान्य को विशिष्ट बनने के लिए विवश करती है।

प्रदीप सौरभ ने आपाधापी के माहौल में पत्रकारिता जैसे पेशे में रहकर 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास का सजन किया । कानपुर में जन्मे प्रदीप सौरभ लंबे समय तक इलाहाबाद में रहे वहीं पर उन्होंने अपना शिक्षा ग्रहण की और जन आंदोलनों में हिस्सा लेते हुए कई बार जेल भी गए । जिंदगी में कई नौकरियां छोड़ी फिर दिल्ली पहुंचकर 'साप्ताहिक हिंदुस्तान' के संपादकीय विभाग से जुड़े, कलम से तनिक भी प्रदीप घबराये नहीं , कैमरे की आंख से उन्होंने बहुत कुछ देखा ।⁶पत्रकारिता में 35 वर्षों से अधिक समय पूर्वोत्तर सहित देश के कई राज्यों में गुजारा। दंगों की रिपोर्टिंग के लिए पुरस्कृत भी हुए। प्रदीप सौरभ ने स्पष्ट किया कि ''लेखकों को रचना के माध्यम से तोला जाए न कि उसके व्यक्तिगत जीवन से। उन्होंने जोर देकर कहा कि जीवन जीने के लिए बचपन से कितने समझौते किये, कितने गलत काम किए होंगे, मैं खड़ा हुं मगर सच तो यह है कि अपने अखबार के मालिक के लिए दलाली करता हूं मगर जब मैं लेखन करता हूं तो स्वतंत्र होता हूं । हर इंसान के चेहरे पर अनेक मुखोटे होते हैं और मैं तो मुखडो का म्युजियम हूं।"⁷

भौतिकतावाद के युग में प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'मुन्नी मोबाइल' अंधाधुंध विकास का प्रमाणिक दस्तावेज है। लेखक ने समकालीन सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ की परतों का अनावरण करते हुए सांस्कृतिक इकाइयों के संघर्षपूर्ण जीवन को बनते बिगड़ते दिखाया है तथा वर्गीय, साम्प्रदायिक

व क्षेत्रीय अस्मिताओं की पड़ताल की है। रवींद्र कालिया का मानना है कि प्रदीप सौरभ के पास नए यथार्थ के प्रमाणिक और विरल अनुभव है। उपन्यास के कथानक में धर्म, राजनीति, बाजार, मीडिया, शिक्षा, बेरोजगारी से संबंधित सामाजिक परिवेश को दर्शाया गया है, साधारण जीवन का कोई भी पहलू प्रदीप सौरभ जी की निगाह से अछूता नहीं रहा। उन्होंने हर पहलू को बारीकी के साथ संस्पर्श किया है कि पाठक बंध के रह जाता है, कथानक इतना आकर्षक है कि कहीं से भी कमजोर नहीं पड़ता। 8 साहिबाबाद दिल्ली एन०सी0आर० का वर्णन करते हुए मुन्नी के माध्यम से शहरीकरण, औद्योगिकरण, सामंतवाद व पूँजीवाद के अंतर्सम्बन्धों को रेखांकित किया है।

28

बाहरी इलाके के एक सीधी-सादी घरेलू नौकरानी का वक्त की हवा के साथ दबंग और स्थानीय दादा बन जाना और फिर लडिकयों की सप्लायर में उसका आखिरी रूपांतरण एक भयावह कथा है जिसमें हमारे समय की अनेक स्थानीय सच्चाईयां छिपी हैं। मृणाल पांडे ने लिखा है ,''मुन्नी मोबाइल की कहानी मोबाइल क्रांति से लेकर मोदी की भ्रांति तक, जातीय सेनाओं से लेकर लंदन के अप्रवासी भारतीयों के जीवन को माप रही है।''⁹ ममता कालिया ने लिखा है,'' मुन्नी मोबाइल समकालीन सच्चाईयों के बदहवास चेहरों की शिनाख्त करता उपन्यास है। धर्म, , बाजार, मीडिया आदि के द्वारा सामाजिक विकास की प्रक्रिया किस तरह प्रेरित और प्रभावित होती है, इसका चित्रण प्रदीप सौरभ ने अपनी मुहावरेदार रवां दवां भाषा के माध्यम से किया है।"10 प्रदीप सौरभ ने 'मुन्नी मोबाइल'उपन्यास में आधुनिक महानगरीय जीवन के कई अनदेखे, अनजाने, अनकहे गवाक्षों को बेधडक खोलने का साहस दिखाया है।

प्रदीप सौरभ ने मुन्नी के माध्यम से एक ऐसा किरदार सुजित करने की कोशिश की है जो समय की हवा के चलते पहले तो दबंग और फिर दादा बन जाती है, बस खरीद कर उसमें कंडक्टर के तौर पर काम करती है, मुन्नी ठकुराइन कहलाती है यहीं उसके जीवन की संघर्ष गाथा खत्म नहीं होती।11 'मुन्नी मोबाइल' एक नया प्रयोग है, बाजारवाद के फलस्वरुप स्त्री जीवन में आई समस्याओं को अपनी लेखनी में प्रदीप सौरभ जी ने समेटने का प्रशंसनीय प्रयास किया है। 21वीं सदी की निम्न वर्गीय स्त्री पर रचित यह उपन्यास यथार्थ के नए पन्नों को खोलता है, स्त्री जीवन के गूढ पक्षों को लेखक ने यथार्थ की नई परिपाटी में रंग कर प्रस्तुत किया है। बाजारवादी संस्कृति के प्रकोप को केंद्र में रखकर 'मुन्नी मोबाइल' की संरचना प्रदीप सौरभ जी ने की है। इस उपन्यास नायिका मुन्नी अभिजात्य परिवारों में झाड़ मारने वाली कामकाजी महिला है जोकि महत्वाकांक्षाओं कें चलते विभिन्न रास्तों को अख्तियार करती है।12 बिंदु से मुन्नी और मुन्नी से मुन्नी मोबाइल कब बन जाती है उसे स्वयं ही पता नहीं चलता।

मुन्नी मोबाइल का कथानक नारी परिकथा के समान है। उपन्यास की नायिका मुन्नी पैसा कमाने में संलग्न है। उसकी महत्वाकांक्षा ही उसे ऐसा करने पर मजबूर करती है।

काम मिलते ही उसका बाहरी दुनिया से परिचय होता है, बाजार की चकाचौंध मुन्नी की लालसा को और बढ़ा देती है। वह घरों में काम करने वाली बाई न रहकर बेरोज़गार औरतों को काम दिलवाने वाली महिला के रुप में उभरती है। मुन्नी को अपने अनपढ़ होने पर कोई ग्लानि का अहसास नहीं होता। बाज़ारवाद के इस दौर में मुन्नी उपयोगिता के प्रत्येक अर्थ व उसके मर्म को समझ पाती है। वह आनंदभारती को खरी खोटी सुनाने में भी संकोच नहीं करती ,"आपने पढ़ कर क्या कर लिया। आप तो वहां पढ़े जहां नेहरू जी पढ़े थे। न अपना घर चलाया न बच्चे पाले,न अपनी लुगाई रख पाये। न अपने मां बाप की इज्जत कर पाये।--- मैं निपढ़ हूं। पढ़ी लिखी नही हूं। आपकी सेवा में रहती हूं। पूरा कुनबा पाल रही हूं। ' ¹³ मुन्नी के कथन में उसका स्वार्थ व अहंकार सिर चढ़ कर संवाद कायम करता है।

बाजारवादी संस्कृति के प्रभाव से मुन्नी चयन और आराम की सांस न ले पाती। घरों में काम करते-करते मुन्नी अत्यंत प्रसन्न हो गई। आनंद भारती के यहां काम करते हुए उसने नॉर्थ इंडियन, चाइनीस, इटालियन, मैक्सिकन आदि कई तरह की पाक कला में महारत हासिल कर ली। मुन्नी सब कुछ तय करके अपने काम को विस्तार देने लगी, ''काम दिलाने के नाम पर पहली तनख्वाह का आधा हिस्सा बतौर कमीशन लेने लगी। ''¹⁴ प्रदीप सौरभ ने उपभोक्तावादी संस्कृति के भंवर में बहती स्त्री की गाथा का गायन किया है जो कि बड़े घरों में झाड़ पौचा करती हुई महानगर की चकाचौंध में लुप्त हो जाती है और अपने मालिक आनंद भारतीय

से मोबाइल की मांग करती है। मुन्नी मोबाइल पाने के लिए आनंद भारती के सामने जिद करती है वे कहती है.'' इस बार मुझे दिवाली गिफ्ट में कुछ स्पेशल चाहिए। आनंद भारती ने कोई जवाब नहीं दिया। चुपचाप अखबार पढ़ते रहे, मैं सीधे उनके अखबार और आंख के बीच की दूरी को कम करते हुए बोली,' मोबाइल चाहिए, मुझे मोबाइल।" आनंद भारती ने मोबाइल उसके सामने कर दिया। उसके चेहरे पर एक खास तरह की मुस्कान चमक उठी, बोली 'नोकिया का है न'।" 15 अनपढ़ होते हुए भी मोबाइल चलाना सीख लेती है। मोबाइल ही वह औजार है जिससे वह दुनिया अपनी मुद्री में करना चाहती है । तकनीक ने औरतों को नई आजादी दी है जिसे भी अपना खुद का स्पेस तैयार करती है । अपनी दुनिया का विस्तार करती हुई उपभोक्तावादी संस्कृति की पहचान बनकर उभरती है। सफलता के संसार में मुन्नी का प्रवेश मोबाइल के सम्पर्क से होता है तभी मुन्नी के जीवन का एक नया अध्याय शुरू होता है मोबाइल उसके जीवन में क्रांति ला

देता है। वह मोबाइल के खेल को समझ जाती है। 16 अनपढ़ होते हुए भी मोबाइल उसके लिए खिलौना बन जाता है और पहली बार आनंद भारती उसे मुन्नी मोबाइल के नाम से

मुत्री मोबाइल का कथानक नारी परिकथा के समान है। उपन्यास की नायिका मुत्री पैसा कमाने में संलग्न है। उसकी महत्वाकांक्षा ही उसे ऐसा करने पर मजबूर करती है।

संबोधित करते हैं और वह इसी नाम से प्रसिद्ध हो जाती है," मेरा नाम मुन्नी मोबाइल है और बिहार की रहने वाली हूं।मैं किसी से डरती नहीं हूं। आप अपना काम करो और मझे अपनी बस चलाने दो।''¹⁷ मोबाइल में जीवन को जितना सरल बनाया है उतना ही उसका प्रभाव विनाशक भी है अमिताभ राय जी लिखते हैं कि "नेट और मोबाइल दुनिया के सब अच्छे बुरे क्रियाकलापों के प्रतीक हैं यह प्रतीक है, यह नहीं मान सकता कि आप सारी दुनिया से कनेक्टेड हैं पर वक्त हर वक्त सारी दुनिया में आप हैं।"18

मुन्नी बाजारवादी संस्कृति की लालसा और सपनों की दुनिया में जीने लगती है, उसकी महत्वाकांक्षाएं निरंतर आगे बढ़ने और पैसा कमाने का दबाव उस पर डालती हैं। मुन्नी अब औरतों को काम

दिलवाने के साथ-साथ नरसिंग का काम भी करने लगी और अवैध गर्भपात करा कर वह पैसे कमाने का धंधा उसे रास आया ,'' गांव में नर्सिंग होम और डॉक्टर न होने के चलते उसकी दुकान चल गई । मुन्नीबाई इसी नर्सिंग होम में बतौर नर्स काम करने लगी। हजारों रुपए उसकी पंगार तय हो गई वह भी केस लाने लगी मोटा कमीशन खाने लगी ।''¹⁹ मुन्नी देवी पैसा हासिल करने के लिए हर गलत रास्ता अपनाया यहां तक कि वह परिवार से अलग हो जाती है, उसके दोनों बेटे और पित भी महत्वाकांक्षाओं की बिल चढ़ जाते हैं। उसका अकेलापन मुन्नी को सेक्स रैकेट चलाने वाली महिला में तब्दील कर देता है, उसकी बेटी तकनीकी साधनों का प्रयोग करते हुए सेक्स रैकेट में शमिल हो जाती है और रेखा चितकबरी के नाम से जानी जाती है। साहिबाबाद दिल्ली एन0सी0आर0 का वर्णन करते हुए प्रदीप सौरभ ने मुन्नी के माध्यम से शहरीकरण, औद्योगिकरण, सामंतवाद व पूँजीवाद के अंतर्सम्बन्धों को रेखांकित किया है।

पूर्वीत्तर प्रभा

वर्ष-1, अंक-2

जुलाई-दिसंबर 2021

बाजारवादी व्यवस्था के परिणामस्वरुप समाज में स्त्री ने आज अपनी पैठ बना ली है, उससे प्रत्येक स्तर पर बाजार ने जनजीवन को प्रभावित किया है। मुन्नी अनपढ़ होते हुए भी साहसी और स्वतंत्र बनकर अपने अधिकारों को भुनाना चाहती है पितृसत्ता की जकड़न उस पर अपना अधिकार नहीं जमाती इसीलिए सही मायने में वह स्वतंत्र स्त्री बनकर वह अपनी स्वतंत्रता को महत्वाकांक्षाओं के उस मोड़ पर ले जाती है जहां से वह कभी वापस नहीं आ सकती। प्रदीप सौरभ जी ने स्त्रीवादी स्वतंत्रता को प्रदर्शित किया है। इस उपन्यास की नायिका मुन्नी आर्थिक स्वतंत्रता की परिचायक है। गांव से आई साधारण स्त्री जो शहर में आर्थिक व्यवस्था के चलते किसी से भी लोहा लेने से नहीं डरती.

आर्थिक स्वतंत्रता स्त्री को मजबूर करती है। उपन्यास की घटना में जब मुन्नी की बेटी को हीरा सिंह ने पीटा तो मुन्नी का हौसला पुलिस अफसरों के सामने दुगुना हो गया ,"और काली की शक्ति लिए उसने आव देखा ना ताव भिड़ गई हीरा सिंह से लट्ठ लेकर दौड़ा दौड़ा लिया हीरा सिंह को---हीरा सिंह

उपभोक्तावाद और सूचना क्रान्ति की अन्धी दौड़ ने हमारे पारस्परिक प्रेम व सद्भाव की गांठ ढीली कर दी है। बाज़ारवादी संस्कृति मीडिया के माध्यम से मुनाफ़ाखोरी को बढ़ावा दे रही है।

के सामने आकर उसने बोला मेरा नाम मुन्नी मोबाइल है इसको कभी ना भूलना। उपभोक्तावादी संस्कृति में स्त्री जागरुक, सचेत, सिक्रय उपभोक्ता के रूप में मौजूद है। ज्ञान और सूचना क्रांति की अंधी दौड़ ने व्यक्ति विहीन उपभोक्ता बनाकर और हमें मशीन का पुर्जा बना कर छोड़ दिया है। इस उपन्यास के माध्यम से प्रदीप सौरभ ने ऐसी गाथा रची है जो भौतिक संसाधनों को पा लेने पर भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने वालों की सच्चाई को परत दर परत उघेड़ा है।

उपभोक्तावाद और सूचना क्रान्ति की अन्धी दौड़ ने हमारे पारस्परिक प्रेम व सद्भाव की गांठ ढीली कर दी है। बाज़ारवादी संस्कृति मीडिया के माध्यम से मुनाफ़ाखोरी को बढ़ावा दे रही हैं। आनंद भारती को उनके शुभचिंतक फोन पर दाढ़ी कटाने की सलाह दे रहे थे। आनंद भारती के अखबार को छोड़कर शेष सभी राष्ट्रीय अखबार मोदी के कारनामों का खुलासा कर रहे थे। मीडियाकर्मियों की कारों पर हमले किए जा रहे थे, टीवी पत्रकारों को कई बार निशाना बनाया गया. आनंद भारती की कार पर भी हमला हुआ एक बार उन्हें दंगाइयों ने पकड़ कर कहा,' बोलो भारत माता की जय, वंदे मातरम।'21 गोधरा कांड के समय आनंद भारती का

व्यक्तिगत अनुभव पाठक को प्रभावित करता है यारों के आगे अपने सीने में डाल दिए कई हिंदुओं ने अपने घरों में मुसलमान साथियों को पनाह देकर उनकी जिंदगी बचाई। जवान मुस्लिम लड़िकयों के अनाथ होने पर बहुत सारे हिंदू मुस्लिम जवान सामने आए। इन मुद्दों के जिरए पाठकों का ध्यान आकर्षित करने की कोशिश की है।

प्रदीप सौरभ ने इस उपन्यास में वेश्यावृत्ति के प्रसंगों की भी चर्चा की गई है। गुजरात में हुए दंगों के बाद राहत शिविरों में महिलाओं की स्थिति पर मियां मिर्ची आनंद भारती से वार्तालाप करता है कि "राहत शिविरों में रह रही लड़कियां रात भर गायब रहने लगी हैं, जिस्मफरोशी कर रही हैं, दंगों में जो औरतें बेसहारा हो गई हैं और शिविरों में नहीं रहती हैं --

> - कौन लोग हैं जो लडिकयां बुलाते हैं ? हिंदू आबादी में रहने वाले ठेकेदार और पैसे वाले लोग शारीरिक सुख भोगने में सांप्रदायिकता क्यों नहीं आती बिस्तर सांझा करते वक्त उनका हिंदुत्व कहां चला जाता है?'22 स्पष्ट है कि सांप्रदायिकता के नाम पर धंधा करने वाले स्त्री भोग

संप्रदायिकता का प्रश्न क्यों नहीं उठाते ? स्त्री को वस्तु की तरह उपभोग करने में धर्म क्यों नहीं आता ? प्रदीप सौरभ ने अपने समय की कड़वी सच्चाई को ब्यान किया है।

प्रदीप सौरभ ने इस उपन्यास में युवा पीढी के भटकाव के प्रसंगों को कॉल सेंटरों के माध्यम से दर्शाया है जो कि प्रसारवादी संस्कृति का ही प्रतिरूप है। अपनी जिंदगी को रात के अंधेरों में बांध लेती हैं उनकी दिनचर्या लोगों के विपरीत कार्यरत होती है जब दुनिया की दौड़ बंद होती है तो नवयुवकों की दौड़ शुरू होतीं है," इन्हीं देशों में किसी भी स्ट्रेंजर लडके लडकी से मुलाकात हो सकती है, दोनों एक साथ रात गुजार लेते हैं। ऐसे शहर में यात्रियों को कॉल सेंटर की दुनिया में 'वन नाइट स्टैंड' कहा जाता है । सेक्स कॉल सेंटरों में नैतिकता से जुड़ी कोई चीज नहीं, लिव इन रिलेशन आम है, आप उसमें लड़कियां भी बदलते रहते हैं उनके बीच आम तौर पर कोई फायदा नहीं होता । मौज मस्ती ही इन रिश्तो का आधार होता है।"23 जिंदगी के चक्र का एक बड़ा बदलाव प्रदीप सौरभ जी ने इस उपन्यास में प्रस्तृत किया है जिसमें शादी, झगड़े, झूठ, फरेब, कोर्ट-कचहरी, टूटते रिश्ते आदि में युवाओं की संलिप्तता बाजारवादी संस्कृति की.ही देन है। विकास की अंधी दौड़ में मानव मूल्य, नैतिकता और

पूर्वोत्तर प्रभा

वर्ष-1. अंक-2

जुलाई-दिसंबर 2021

Vol-1, Issue-2

संवेदना के लिए कोई स्थान नहीं रह गया लेकिन फिर भी तकनीकी प्रगति का हमारे जीवन में बहुमूल्य योगदान रहा है, यह मानव जीवन के लिए विकास और विनाश दोनों की ही सूचक है।

वैश्वीकरण के दौर में प्रवेश करने के बाद दुनिया में एक तेजी से चीज विस्तार में फैली है, वह प्लास्टिक मनी क्योंकि अब क्रेडिट कार्ड का जमाना है । बाजारवादी सोच ने संयम को दमन के रूप में प्रचारित किया । आज हर कोई शुन्य ब्याज दर के मोहक मायाजाल में लोगों को भ्रमित करना चाहता भ्रमित करना चाहता है । क्रेडिट कार्ड ने संयम की परिभाषा ही बदल दी । इसने एक और व्यक्ति के जीवन को सुविधा युक्त बनाया है तो दूसरी और बिना पैसे के मौज मस्ती की आदत भी बनाई है । प्रदीप सौरभ ने क्रेडिट कार्ड पर चुटकी करते हुए लिखा है,'' अमेरिकी के पास औसतन 15 क्रेडिट कार्ड होते हैं उनके यहां किसी बुजुर्ग की मौत पर विरासत में परिवार वालों को क्रेडिट कार्ड्स और दूसरे लोन के बिल मिलते हैं । भारत में ऐसी स्थिति में परिवार वालों को मकान, सोना, चांदी और बहुत कुछ मिलता है। ऐसा दर्शन है कि उधार लेकर पी जाओ।"24 प्रदीप सौरभ जी ने इस उपन्यास में अमेरिकी और भारतीय विचारधारा की तुलना की है । बाजारवाद ने शहरों को ही अपने मकडजाल में पकड रखा है । ग्रामीण समुदाय आज भी जरूरत की वस्तुओं को ही प्राथमिकता दे रहा है। खेतों में लगाई जाने वाली फसल का मूल्य अब अंतर्राष्ट्रीय बाजार तय करने लगे हैं।

साहित्यकार भविष्य का द्रष्टा होता है और यह भविष्य कल का यथार्थ है। प्रदीप सौरभ जी ने 'मुन्नी मोबाइल' उपन्यास में बाज़ारवाद की माया मोहिनी से बचते हुए लेखन का दायित्व निभाते हुए जनता को तैयार करने की चुनौती से लैस होकर सुजनशीलता का धर्म निभाया हैं, उनके प्रतिरोध को व्यर्थ नहीं समझना चाहिए। बाजारवादी संस्कृति के वर्चस्व से आज आज हमारी नैतिकता, मूल्य, भावनाएं, मनुष्यता, सामाजिकता संकट में है। प्रदीप सौरभ ने आधुनिक महानगरीय जीवन के कई अनदेखे, अनजाने, अनकहे गवाक्षों को बेधडक खोलने का हौसला दिखाया है । बाहरी इलाके के एक सीधी-सादी घरेलू नौकरानी बिन्दू बनी मुन्नी का वक्त की हवा के साथ दबंग और स्थानीय दादा बन जाना और फिर लड़कियों की सप्लायर से मुन्नी मोबाइल में रूपांतरण एक भयावह कथा है जिसमें कडवी सच्चाईयां छिपी हैं। प्रदीप सौरभ ने समकालीन सामाजिक, राजनीतिक यथार्थ की परतों का अनावरण करते हुए सांस्कृतिक इकाइयों के संघर्षपूर्ण जीवन को बनते बिगडते दिखाया है तथा वर्गीय, साम्प्रदायिक व क्षेत्रीय अस्मिताओं की पड़ताल की है। समाज के सचेत साहित्यकार की मुख्य भूमिका हो जाती है कि वे बाज़ार के खतरों के प्रति आम आदमी को सचेत करें। बाज़ारवादी ताकतें समाज पर हावी हो रही हैं। लोगों की आदतें और दिमाग का ढांचा बदलने का काम बाज़ारवाद ने किया है, यही

इस आलेख का अभिप्रेत है। बाज़ारवादी संस्कृति किस प्रकार मनुष्य की मान्यताओं को लीलकर भौतिक लिप्साओं को जागृत कर सामान्य को विशिष्ट बनने के लिए विवश करती है। भौतिकतावाद के युग में प्रदीप सौरभ का उपन्यास 'मुन्नी मोबाइल' बाजारवाद का प्रामाणिक व जीवन्त दस्तावेज है।

सन्दर्भ:

- http://www.weekandtimes.com/archives/3562
 1
- 3. http://www.apnimaati.com/2018/02/26.html
- 4. https://www.pravakta.com/hindi-literature7/
- 5. https://ajayanurag.wordpress.com/tag/
- 6. http://www.rachanakar.org/2007/12/blog-post-10.html
- 7. https://hindi.oneindia.com/news/2009/12/21/ 1261363042.html
- 8. 8https://www.bhadas4media.com/old/media-book-novel-munni-mobile/
- 9. http://vaniprakashanblog.blogspot.com/2012/04/blog-post_2133.html
- 10. http://vaniprakashanblog.blogspot.com/2012/04/blog-post 2133.html
- 11. https://hindi.webdunia.com/article/hindibooks-review/मुन्नी-मोबाइल-अपराध-जगत-का-सच- 109122000030_1.htm
- 12. सौरभ, प्रदीप, 'मुन्नी मोबाइल', वाणी प्रकाशन, दिल्ली,2011,प 94
- 13. वही पृ.155
- 14. वही प्र.96
- 15. वही पृ.10
- 16. वही पृ.98
- 17. http://creativekona.blogspot.com/2010/04/blog-post_20.html
- 18. सं0-सत्यकाम, समीक्षा, अक्टूबर-दिसम्बर-2011, अंक-4, पृ.35
- 19. वहीं पृ.95
- 20. http://sahityakunj.net/entries/view/samyikchunautiyon-ke-sandarbh-mein-nai-sadi-kehindi-upnyas
- 21. वहीं पृ. 103
- 22. वही पृ. 153
- 23. http://spardhamann.blogspot.com/2010/01/blog-post_08.html
- 24. वही पृ. 116